विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

गर्मी में इंसान ही नहीं पशु-पक्षी भी हलकान

यह गर्मी का मौसम है। इसमें पानी की कमी और बीमारियां आम बात है। विशेषकर मानव को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। मानव गर्मी की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है मगर बेजुबान पशु-पक्षियों के लिए गर्मी प्रताड़ना का काम करती है। गर्मी के मौसम में पशु-पक्षियों में कई प्रकार की परेशानी देखने को मिलती है क्योंकि गर्म हवा और चिलचिलाती धूप उनके लिए अनुकुल नहीं होती है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे पशुओं और पक्षियों पर इसका असर देखने को मिलेगा। गर्मी ने धीरे-धीरे अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है। ऐसे में इंसानों के साथ पशु-पक्षी भी काफी बेहाल है।

उमस होने के कारण जब इंसानों के पसीने छूट रहे हैं, ऐसे में आसमान में उड़ने वाले परिंदों पर क्या बीत रही है। गर्मी में पानी को अमृत के समान माना जाता है और इस चिलचिलाती धूप में बार-बार प्यास लगना स्वाभाविक है। मौसम अपने परिवर्तन के साथ कई प्रकार की परेशानियां लेकर आता है। तापमान का पारा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। बढ़ती गर्मी लोगों के साथ ही पक्षियों के लिए भी बेहाल करने लगी है। पक्षी इस मौसम में ज्यादा प्रभावित होते हैं। मानव जैसे-तैसे इस भीषण गर्मी से सुरक्षित रख पाता है, लेकिन आवारा पशु व पक्षियों के लिए ये गर्मी मुश्किलें पैदा करती हैं, खाना और पानी की खोज में लगातार धूप में उड़ते रहने से वे कमजोर हो जाते हैं। इस तपती गर्मी में पेड़ों की लगातार कमी और सूखते जल स्त्रोत की वजह से पक्षी और अन्य जानवर आश्रय और दाना पानी की तलाश में इधर-उधर भटकते रहते हैं। आदमी को प्यास लगती है तो वह कहीं भी मांग कर पी लेता है, लेकिन मूक पशु-पक्षियों को प्यास में तड़पना पड़ता है, हालांकि जब वे प्यासे होते हैं तो घरों के सामने दरवाजे पर आकर खड़े हो जाते हैं। कुछ लोग पानी पिला देते हैं तो कुछ लोग भगा भी देते है। इस गर्मी में पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए लोगों को प्रयास करना चाहिए। आपको अगर ऐसा लग रहा है कि पक्षी-जानवर तो अपने लिए पानी का इंतजाम कर ही लेते होंगे। असल में ऐसा है नहीं है। एक समय था जब वे पानी की व्यवस्था कर लेते थे, क्योंकि तब उनके लिए पानी के प्राकृतिक स्त्रोत जैसे नदी, तालाब आदि थे। जो अब या तो नष्ट हो चुके हैं या गंदे हो गए हैं। गर्मी का असर पशुओं के साथ-साथ पक्षियों पर होता है।

सच तो यह है पक्षी गर्मी के झुलसते मौसम में ज्यादा प्रभावित होते हैं। खाना और पानी की खोज में लगातार धूप में उड़ते रहने से वे कमजोर हो जाते हैं। इसके अलावा पेड़ों की कटाई-छंटाई के कारण कहीं रुककर आराम करने के लिए इनके पास कोई आशियाना भी नहीं होता है। हर साल पक्षियों के गिरने या घायल होने के ढेरों मामले सामने आते हैं। इस सबके चलते हर साल गर्मियों के मौसम में पक्षियों और जानवरों की अकाल मौत हो जाती है।

गर्मियों का मौसम मानव के साथ-साथ पशु पक्षियों के लिए बहुत कष्टप्रद होता है। इस बार मार्च की अपेक्षा अप्रैल के महीने से तेज गर्मी देखने को मिली। गर्मी ने पशु-पक्षियों को चपेट में लेना शुरू कर दिया है। पशु-पक्षियों को जिंदा रहने के लिए हर रोज पानी की जरूरत होती है। गर्मियों में हर साल सैकड़ों पक्षी और आवारा पशु पानी की कमी से मर जाते हैं। तेजी से कम होते प्राकृतिक जल स्त्रोत और पेड़ों की कमी से इन बेजुबानों की स्थिति विकट हो गई है। गर्मियों में पक्षियों को भी प्यास अधिक लगती है जबकि पानी की उपलब्धता कम हो जाती है। गर्मी की तपन के साथ बेजुबान जानवरों की परेशानियां बढ़ गयी। एक जमाना था जब देशभर में पानी के प्राकृतिक स्त्रोत मौजूद थे। मगर आज पानी के प्राकृतिक स्त्रोत न के बराबर हैं। जो बचे भी हैं उनका पानी पीने योग्य नहीं है। ऐसे में आप तो अपने घर में साफ पानी की व्यवस्था कर लेते हैं मगर जानवरों और पक्षियों को इन्हीं गंदे पानी के स्त्रोतों से प्यास बुझानी पड़ती है जिससे इनको फायदा कम होता है बल्कि ये बीमार भी हो जाते हैं।

गर्मियों में हर साल सैकड़ों पक्षी और आवारा पशु पानी की कमी से मर जाते हैं। तेजी से कम होते प्राकृतिक जल स्त्रोत और पेड़ों की कमी से इन बेजुबानों की स्थिति विकट हो गई है। गर्मियों में पक्षियों को भी प्यास अधिक लगती है जबकि पानी की उपलब्धता कम हो जाती है। गर्मी की तपन के साथ बेजुबान जानवरों की परेशानियां बढ़ गयी। एक जमाना था जब देशभर में पानी के प्राकृतिक स्त्रोत मौजूद थे।

घरों के आँगन तथा छत पर पंछियों के लिए छोटे-छोटे पात्रों में जल भरकर रखना चाहिए, जिससे गर्मी में थक कर आये पक्षी जल ग्रहण कर पुन: अनंत आकाश में गोता लगा सकें। गर्मी की तपन से इन्हें बचाने के लिए जिस तरह इंसान को शुद्ध पानी और वायु की जरूरत होती है, उसी प्रकार गर्मी में पशु, पक्षियों के लिए पानी का इंतजाम लोग करते हैं, ताकि पक्षियों को भी जीवन मिल सके। पशु-पक्षियों की सेवा करने वाले लोगों का मानना है घर की छतों पर पक्षियों के लिए दाना-पानी रखने से घर में स्मृद्धि आती है। शास्त्रों में बेजुबान जानवरों की सेवा करने के लिए कहा गया है। इसका भी अपना धार्मिक महत्व है। साथ ही पशुओं और पक्षियों की सेवा करने से मन को काफी शांति मिलती है। ज्योतिष के अनुसार भी पक्षियों को पानी पिलाने के बहुत से फायदे हैं। पशु-पक्षियों को दाना और पानी खिलाने-पिलाने से भविष्य में आपके ऊपर आने वाली परेशानियां ये बेजुबान जानवर उसे अपने ऊपर ले लेते हैं। इसके अलावा यह आपके ग्रह संबंधी दोषों को भी दूर करते हैं जिससे आपकी परेशानियां कम होने लगती है।

गर्मी शुरू होते ही समाज सेवी लोग जगह-जगह प्याऊ की व्यवस्था करते है। आज जरुरत इस बात की है की ठीक वैसे ही पक्षियों के लिए भी प्याऊ की व्यवस्था की जाये ताकि उन्हें भी गर्मी में साफ और ठंडा पानी मिल सके। साफ पानी न मिलने से उन्हें गर्मी में ज्यादा तकलीफ होती है। पानी खत्म होते ही दूसरा पानी और गर्म होते ही ठंडा पानी भरें, ताकि जानवरों को भी शुद्ध और ठंडा पानी मिल सके। घर के बाहर या बालकनी में छांव वाली जगह पर बर्तन में पानी भरकर रखें। पानी और दाना आदि रख रहे हैं तो नियमित तौर पर इसे बरकरार रखें। इस चीज को सुनिश्चित कर लें कि पानी का बर्तन जानवर या पक्षी के आकार के लिहाज से उचित हो, ज्यादा छोटा या ज्यादा बड़ा बर्तन भी ठीक नहीं। एक समय ऐसा भी था जब लोग अपने घरों के बाहर जानवरों के लिए पानी के छोटे कुंड बनाते थे मगर शहरीकरण के कारण यह व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी। गर्मी में पानी को अमृत के समान माना जाता है, मनुष्य को प्यास लगती है तो वह कहीं भी मांग कर पी लेता है, लेकिन मूक पशु-पक्षियों को प्यास में तड़पना पड़ता है, हालांकि जब वे प्यासे होते हैं तो घरों के सामने दरवाजे पर आकर खड़े हो जाते हैं। कुछ लोग पानी पिला देते हैं तो कुछ लोग भगा भी देते है। पक्षी है तो संसार का अस्तित्व है। गर्मी और अन्य समस्याओं से पक्षियों का बचाव बहुत जरुरी है। हमें हमेशा पक्षियों के प्रति प्रेम और सद्भाव से पेश आना चाहिए ।

वह भी हमारी तरह खुशी और दु:ख के भाव महसूस करतें हैं। वे बोल नहीं सकतें पर उनकी अपनी बोली है। कहीं लोग पक्षी पालतें हैं। पिंजरें में पक्षियों को रखकर पालना गलत है। पक्षी स्वभाव से आजाद है उनको आजाद छोड़ना ही सही होता है। यदि हम किसी पीड़ित पक्षी को देखें तो उसकी मदद करनी चाहिए। पक्षियों को चिकित्सक के पास ले जाकर उसका इलाज करवाना बड़े पुण्य का काम होगा। पक्षी भी पीड़ा महसूस करतें हैं। बहुत कम लोगों में पक्षी के प्रति प्रेम भावना जीवित हैं। अगर किसी में यह न भी हो तो कम से कम उन्हें तंग न करें। किसी छोटे बच्चे को किसी प्राणी पर अन्याय करते हुए देखें तो उन्हें रोकें और समझाएं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों की सर्वकालीन उपादेयता सर्वसिद्ध है

भागचंद जैन मित्रपुरा

वीर निर्वाण संवत सबसे प्राचीन जैन धर्म अनादि, शास्वत धर्म है। इस काल में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ थे एवं अन्तिम 24वें तीर्थंकर वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर है। भगवान महावीर का जन्म 599 ई.पूर्व क्षत्रीय कुण्डाग्राम (कुण्डलपुर-वैशाली) वर्तमान बिहार राज्य में हुआ था। इनके पिता का नाम राजा सिद्धार्थ एवं माता का नाम रानी त्रिशला था। वर्हदमान के जन्म के समय स्वर्गलोक से जन्मोत्सव मनाने आए सौधर्म इंद्र ने बालक की शक्ति को अनुभव किया और वीर नामकरण कर दिया। महावीर के जन्म के साथ ही राज्य समृद्ध होने लगा एवं चारो ओर राज्य की कीर्ति फैलने लगी, इसे देखते हुए बालक का वर्धमान नाम रखा गया। कालांतर में दो चारण ऋद्धिधारी मुनियों का शंका समाधान वर्धमान को देखते ही स्वत: ही हो गया, उन्होंने वर्धमान को सन्मति नाम से पुकारा। गजशाला के एक मदोन्मत्त हाथी को वश में करने पर अतिवीर कहलाए।

संगम देव द्वारा भयंकर सर्प का रूप धारण कर वर्धमान की शुरवीरता की परीक्षा ली। सर्प को वश में कर लेने पर महावीर के नाम से जाने जाने लगे। महावीर जन्म से परोपकार में लग गए थे। भगवान महावीर का जन्म ऐसे समय में हुआ जब कर्मकांडों का बोलबाला था एवं यज्ञों में जीवित पशुओं की बलि दी जाती थी। महावीर धीरे-धीरे बड़े होने लगें। उन्हें अपने आत्म कल्याण का समझ में आने लगा था। इस संसार को निस्सार मानते हुए भोगों में कभी प्रवृत्त नहीं हुए और आत्म चिंतन में लीन रहने लगे। तीस वर्ष की अवस्था में ही गृह त्याग कर वन की ओर प्रस्थान कर आत्म ध्यान में लीन हो गए। लगातार 12 वर्ष 5 माह एवं 15 दिन तक तप, संयम एवं साम्यभाव की साधना की, पंचमहाव्रत आत्मसात किया।

एक दिन ऋजुकूला नदी के किनारे आत्म ध्यान में लीन थे तब अपने घातिया कर्मो का नाश कर उन्हे वैशाख शुक्ला दशमी के दिन सम्पूर्ण ज्ञान, केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। इन्द्र की आज्ञा पाकर धनपति कुबेर ने समवशरण की रचना की। लेकिन गणधर के अभाव में छयाछठ दिन तक उनकी दिव्य ध्वनि नहीं खिरी। इंद्रभूति नामक ब्राह्मण के समवशरण में आने पर भगवान की दिव्य वाणी खिरी एवं इंद्रभूति के प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रथम उपदेश में जीव के स्वरूप का ज्ञान कराया। इंद्रभूति ही भगवान के प्रथम गणधर बने जो गौतम गणधर के नाम से प्रसिद्ध हुए। तीर्थंकर के 10 और गणधर बने। भगवान अर्ध-मागधी भाषा में तत्वों का उपदेश करते थे और गौतम गणधर उसे ग्रंथ रूप में संकलित करते थे।

महावीर ने 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पद विहार कर संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य धर्म को आम जन में प्रसारित किया। रत्नत्रय की अवधारणा से परिचित कराया। भगवान महावीर धर्म का प्रचार करते करते पांवापुर आए, वहां योग - निरोध कर आत्मध्यान में लीन हो विराजमान हो गए। अघातिया कर्मो का नाश कर कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन प्रात:काल के समय 72 वर्ष की अवस्था में, ईसा से 527 वर्ष पूर्व निवार्ण प्राप्त किया। इस दिवस को दीपावली के रूप में मनाते है।

भगवान महावीर एक विलक्षण सम्पूर्ण जीवन दृष्टा थे। उन्होंने कर्म सिद्धांत को अपनाया, कर्म करने पर ज़ोर दिया। यह संदेश दिया कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। इस तरह ईश्वर की सत्ता की जगह हम सब में ईश्वर बनने की क्षमता का संचार किया। यह संदेश दिया कि हमारे सुख-दुख के लिए हम स्वंय ज़िम्मेदार है। हमारे द्वारा किये गये कर्मों का फल हमें स्वयं ही भोगना है। भगवान महावीर के सिद्धांतों में से वर्तमान परिपेक्ष में अहिंसा, अनेकांतवाद व अपरिग्रह की विशेष उपयोगिता है।

भगवान महावीर ने अहिंसा के सूक्ष्म से सूक्ष रूप का व्यापक विश्लेषण किया है। अहिंसा को जीवन शुद्धि का आधार बताया है। यदि संसार के तथाकथित शक्ति के केंद्र जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत के ऊपरी आवरण का भी पालन कर ले या समझ भी ले तो रूस एवं यूक्रेन, चीन एवं ताईवान, फिलिस्तीन (हमास) एवं इजराइल, आदि देशों के बीच जारी भीषण विभित्सिका को रोका जा सकता है। युद्ध का अंत अवश्यंभावी है, लेकिन अहिंसा से ही संभव है। अहिंसा पालन जैन धर्म का एकाधिकार नहीं है, लेकिन मार्ग दर्शक जरूर है। सभी को अहिंसा के मार्ग पर आना होगा, इसके बिना और कोई दूसरा उपाय नहीं है। हमें किसी को भी मारने का अधिकार नहीं है। जीने का अधिकार प्राणी मात्र को है। किसी दूसरे के अच्छे जीवन की कामना से ही स्वयं का जीवन ख़ुशहाल हो सकता है, यही सत्य है। मन, वचन और कर्म से अहिंसा को आत्मसात करने का संदेश समाज में स्थाई शान्ति के लिए महत्वपूर्ण है। भगवान महावीर ने किसी और पर विजय प्राप्त करने की बजाय, जिसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है, स्वयं पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा दी। दूसरों का बुरा चाहकर कोई भी अपना भला नहीं कर सकता है। भगवान महावीर की अहिंसा के अमोघ हथियार को महात्मा गाँधी ने अपनाया और भारत को शक्तिशाली अंग्रेज़ों की दासता से मुक्त कराया। कोरोना काल ने महावीर के उपदेशों की प्रासंगिकता सर्व सिद्ध कर दी है।

तीर्थंकर महावीर ने हमें अनेकांतवाद का दर्शन दिया। अनेकांत दृष्टि हमें सहिष्णु बनाती है, जीओ और जीने दो या सह अस्तित्व का उदार भाव प्रदान करती है। भगवान महावीर के अनुसार सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की है, और आज दुनिया इसी कारण संघर्ष कर रही है। वैचारिक मतभेद अनेक समस्याओं की जड़ है। महावीर ने मताग्रह छोड़ने एवं विचारों मे समानता तथा सहिष्णुता पैदा करने पर बल दिया। अनेकांत का अर्थ है वस्तु को अनेक गुणों या धर्मों में देखना। अनेकेअन्ता: धर्म्म: यस्मिन् स अनेकांत। महावीर ने कहा कि वस्तु के अनंत धर्मों और पर्यायों को अनन्त चक्षुओं से देखो, किसी एक कोण से नहीं। अनेकांत का सिद्धान्त पारस्परिक सौहार्द को बढ़ाता है मनमुटाव, द्वेष व जलन को दूर करता है। इस सिद्धांत को अपनाने से स्वयं, परिवार, समाज, देश व सम्पूर्ण विश्व में वैचारिक आतंकवाद का ख़ात्मा किया जा सकता है। यह अवधारणा सभी समस्याओं का समाधान प्रदान करती है।

भगवान महावीर अपरिग्रह का सिद्धान्त सीमित संसाधनों के साथ जीवन यापन करना सिखाता है। अधिक सम्पत्ति एकत्र करने के लिए हिंसा, झूठ, चोरी तथा कुशील का सहारा लेना पड़ता है। तनाव, चिन्ता और बीमारियों की जड़ परिग्रह है। यहाँ तक कहा गया है कि दान देने के लिए भी संग्रह नहीं करना चाहिए। जैन दर्शन एक नया चिंतन देता है। रत्नत्रय सम्यक दर्शन, सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र तीनों सही रूप में जीवन में उतारेंगे तभी जीवन की सार्थकता होगी एवं मोक्ष मार्ग प्रशस्त होगा। भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति की दिशा में इन सिद्धांतों का प्रयोग किया। उन्होंने स्त्रियों के उत्थान के लिए दासता, सामाजिक समता, समान दर्जा आदि के लिए शुरूआत की। वर्तमान में महिला सशक्तिकरण के साथ स्वच्छता, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, जनसंख्या नियन्त्रण जैसे अभियानों के संदर्भ में भगवान महावीर के सिद्धांत अत्यधिक प्रासंगिक हो गये है। यद्यपि भगवान महावीर ने ईसा से 599-527 वर्ष पूर्व लोगों के जीवन दर्शन की राह दिखलाई थी तथापि 2550 वर्ष पश्चात भी उनके बताये गये सिद्धांत पूर्णत: प्रासंगिक है। सार्वकालिक है, सार्वभौमिक है, कल-आज और कल हर समय उपयोगी है। कोरोना काल में महावीर के सिद्धान्त व जैन जीवन शैली पूर्णतया कारगर रही है। जैन धर्म केवल जैनियों का ही धर्म नहीं है, जैन धर्म के सिद्धान्तों की पालना करके कोई भी जैन बन सकता है एवं अपना जीवन सार्थक कर सकता है। क्या किसी भी जीव को सताए बिना, मारे बिना, लड़ाई किए बिना कोई वीर, अतिवीर, सन्मति वीर एवं महावीर बन सकता है? तीर्थंकर महावीर ने ऐसा करके दिखाया है। जीओ और जीने दो, अहिंसा परमो धर्म :, परस्परोप ग्रहो जीवानाम् की अवधारणा को जन मानस द्वारा आत्मसात करना है। तीर्थंकर महावीर की स्मृति में वीर निर्वाण सम्वत भगवान महावीर के निर्वाण के अगले दिन से ही 2550 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ। यह विश्व में सबसे प्राचीन सम्वत है एवम् प्रचलन में है। भगवान महावीर का 2623वाँ जन्म कल्याणक वर्ष बिना किसी आडंबर के अहिंसा का पालन करते हुए मनोयोग से मनाएं।

संकलन-भागचंद जैन
मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय
जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

जैसलमेर गोडावण ब्रीडिंग सेंटर में अब गोडावण की संख्या बढ़कर 32 हुई

गोडावण ब्रीडिंग सेंटर में अंडे में से चूजा निकला

जैसलमेर, (निसं)। जिले के गोडावण ब्रीडिंग सेंटर से खुशखबरी आई है। सम गांव स्थित सुदासरी के गोडावण ब्रीडिंग सेंटर में टोनी नामक मादा गोडावण के अंडे से एक नन्हा चूजा निकला है। गोडावण ब्रीडिंग सेंटर में अब गोडावण की संख्या बढ़कर 32 हो गई है।

डेजर्ट नेशनल पार्क डीएफ़ओ आशीष व्यास ने बताया कि ब्रीडिंग सेंटर में लगातार गोडावण का कुनबा बढ़ रहा है। आशीष व्यास ने बताया कि सुदासरी स्थित गोडावण ब्रीडिंग सेंटर में गुरुवार को टोनी नामक मादा ने लियो नामक मेल गोडावण से मेटिंग के बाद दिए अंडे से चूजा बाहर आया है। उन्होंने बताया कि इस सीजन का ये तीसरा चूजा है। इस तरह अब गोडावण ब्रीडिंग सेंटर में गोडावण की संख्या लगातार बढ़ते हुए 32 तक पहुंच गई है। वन्यजीव प्रेमियों के लिए ये बहुत बड़ी खुशी की बात है कि सरकार के ब्रीडिंग सेंटर में कुनबा बढ़ रहा है।

व्यास ने बताया कि 2019 में जंगल में मिले एक अंडे से एक मादा गोडावण ने जन्म लिया था। उस अंडे से निकली मादा का नाम अफ्रीकी मूल की पहली अमेरिकी लेखिका टोनी मॉरिसन के नाम पर रखा गया, क्योंकि उसी दौरान नोबल पुरस्कार विजेता टोनी मॉरिसन का निधन हुआ था। सम स्थित ब्रीडिंग सेंटर में टोनी मॉरिसन नामक मादा गोडावण के अंडे से बाहर आया चूजा विशेषज्ञों के ऑब्जर्वेशन में है और पूरी तरह स्वस्थ है। जिले में गोडावण की तादाद बढ़ाने के लिए कई सालों से सम स्थित सुदासरी में ब्रीडिंग सेंटर चलाया जा रहा है। हाल ही में पिछले साल रामदेवरा में भी ब्रीडिंग सेंटर शूरू किया गया है। यहां जंगल में मिले अंडों को विशेषज्ञों की देखरेख में पाला जाता है और उन अंडों से गोडावण का कुनबा लगातार बढ़ रहा है। इन अंडों से अब तक 32 गोडावण हो चुके हैं, जिनमें 4 इन्हीं गोडावण की मेटिंग से बच्चे निकले हैं। एक चूजा पिछले साल और इस साल तीन चूजे अंडे से बाहर आए हैं। इनमें अब 19 गोडावण सम ब्रीडिंग सेंटर में और 13 रामदेवरा स्थित गोडावण ब्रीडिंग सेंटर में है।

- **जिले में गोडावण की तादाद बढ़ाने के लिए सम स्थित सुदासरी में ब्रीडिंग सेंटर चलाया जा रहा है**

जैसलमेर के सुदासरी गोडावण प्रजनन सेंटर में नया मेहमान आया।

लंदन से मतदान करने पहुंची बीकानेर की बेटी

बीकानेर, (निसं)। धार्मिक पर्व व त्यौहार की तरह मतदान भी लोकतंत्र का सबसे बड़ा पर्व है और विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र देश भारत के चुनाव हो तो वोट की कीमत और भी बढ़ जाती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वोट करना देश के हर नागरिक का अधिकार है तथा हर मतदाताओं को पॉलिंग बूथ पर पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग करना चाहिए। लंदन में रह रही बीकानेर की बेटी और डेटा प्रोटेक्शन कंसलटेंट भाग्यश्री स्वामी ने न केवल अपने वोट की कीमत पहचानी, बल्कि वोट करने के लिए सात समुद्र पार कर बीकानेर पहुंची। भाग्यश्री ने मतदान केन्द्र पर पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर लोगों को भी सीख दी है। उधर पैरा ओलंपियन पंकज सेवग ने भी अपने बूथ पर पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। दूसरी ओर मतदान को लेकर व्यस्त रहे भाजपा के प्रत्याशी अर्जुनराम मेघवाल ने शहर के भीतरी क्षेत्र में कुछ पल अपने साथी भाजपा कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों के साथ बिताए, बल्कि इस भागदौड़ में बीकानेरी भुजियां का लुत्फ उठाया।

- **पैरा ओलंपियन पंकज सेवग ने भी अपने मताधिकार का प्रयोग किया**

भाग्यश्री स्वामी

तीन पीढ़ियों ने एक साथ मतदान किया

बिसाऊ, (निसं)। बिसाऊ में शुक्रवार को लोकसभा चुनाव के पहले चरण में कस्बे में शांतिपूर्ण मतदान हुआ कस्बे में कुल मतदाता 19277 थे जिनमें से 10949 मतदाताओं ने अपना मताधिकार का प्रयोग किया। कस्बे में कुल 16 बूथ थे जहां पर शांतिपूर्ण मतदान हुआ। पुलिस प्रशासन मुस्तेद था। कुल 56.8 प्रतिशत मत पड़े। अधिकतर बूथें पर महिलाओं अपना मताधिकार का प्रयोग किया। वहीं 3 पीढियों ने एक साथ मतदान किया।

लोकसभा चुनाव 2024 के मतदान के दौरान कुछ रोचक दृश्य भी देखने को मिले। ऐसा ही रोचक दृश्य बिसाऊ में देखने को मिला, जब राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, वार्ड नं 9 में मतदान केंद्र संख्या 71 पर 3 पीढ़ियां एक साथ मतदान के लिए पहुंची। यहां दादा भोलाराम जांगिड़, पुत्र सुशील कुमार जांगिड़ और उनके पुत्र राहुल जांगिड़ ने एक साथ मतदान किया। तीनों ने मतदान केंद्र पर सुचारु व्यवस्थाओं के लिए प्रशासन एवं मतदानकर्मियों को धन्यवाद दिया।

- **तीनों ने मतदान केंद्र पर व्यवस्थाओं के लिए धन्यवाद दिया**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 20 अप्रेल, 2024

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 2:04 तक, ध्रुव्र योग रात्रि 2:47 तक, बव करण प्रात: 9:23 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:51 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात है। अमृत सिद्धि योग सांय 5:08 से सूर्योदय तक है। रवियोग सांय 5:08 से आरम्भ होगा। आज विष्णुदमनोत्सव, मदन द्वादशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:38 से 9:14 तक, चर 12:26 से 7:02 तक, लाभ-अमृत 2:02 से 5:14 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 6:50

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

सिंह

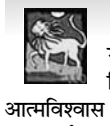

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आज शुभ-मांगलिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

तुला

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।